पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

मनुष्य के अंतर्मन को और गहराई से समझने हेतु कुछ और ऐसी बातें हैं जिनपर हमें बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। मनुष्य जो कुछ सोचता है, जो करता है, जो कहता है, वो सबकुछ चेतना द्वारा ही होता है। लेकिन हम सारे अचेत होते हैं, इसलिए शायद ये बातें हमारे समझ से परे रहती हैं।

पिछले सारे लेखों में आपने देखा होगा कि अंतर्मन की बातें समझने हेतु हमें अपने चेतन मन को भी समझना पड़ता है। हमारी आत्मा के अंदर गुण तो सातों विद्यमान हैं ही, साथ ही आज विकारों के वश होने के कारण हम सारे अपने गुणों और अवगुणों में भेद नहीं कर पाते।

मनुष्य के अंतर्मन में बहुत सारी वासनायें एवं विकृतियाँ हैं, जिनकी तृप्ति वो चाहता है। लेकिन उसका चेतन मन उसे स्वीकार नहीं करता, पता है क्यों, क्योंकि हम सारे मूल स्वरूप में सतोप्रधान हैं। अत: अंतर्मन अपनी तृप्ति का दूसरा साधन ढूंढ़ लेता है। वह उन वासनाओं का आरोपण दूसरों पर करता है। जिससे उसको विकृत रूप से तृप्ति भी मिलती है। उन वासनाओं से वो स्वयं को तो मुक्त समझता है लेकिन दूसरों को जकड़ा हुआ समझता है। इस प्रकार वो दिन-रात दूसरों के अवगुणों का ही चिंतन करता रहता है।

ये निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य दूसरों में वही अवगुण देखता है जो उसी में विद्यमान रहता है। बाहर का संसार तो सिर्फ दर्पण मात्र है, जो हमारी आत्मा को सत्य रूप से प्रतिबिंबित करता है। उदाहरण के लिए किसी ईर्ष्यालु व्यक्ति को लगता है कि सभी उससे ईर्ष्या करते हैं। कोई अगर लोभी व्यक्ति है तो उसको चारो तरफ लोभ नज़र आता है। कामी व्यक्ति को सभी कामी ही लगते हैं। ये संसार हमारे अवगुणों को पूरी तरह से सबके सामने लाने का एक माध्यम है। दूसरे शब्दों में कहें

तो बाहर के लोग हमारे लिए क्ल्यू हैं। जिसको देखने के बाद हमारे अंदर के सारे फोल्डर्स और फाइल्स खुल जाते हैं। अत: हमें इस बात पर कभी भी आपत्ति नहीं जतानी चाहिए कि व्यक्ति उसके बारे में क्या कह रहा है, जो जैसा होता है उसको पूरी दुनिया वैसी ही दिखती है। हमारे मन का संसार इतना विशाल है कि उसमें पूरे ब्रह्माण्ड की ऊर्जा को भी समाहित कर सकते हैं। लेकिन इधर-उधर की बातें, दूसरों के बारे में चिंतन, हमारी रचनात्मकता को नष्ट कर देती हैं।

इसका एक उदाहरण और हो सकता है, जब साधारण मनुष्य विषयों का चिंतन करता है, उससे उसका लगाव हो जाता है, और अत्यधिक लगाव के कारण काम की उत्पत्ति होती है। काम की पूर्ति न होने से क्रोध आता है और क्रोध करने से विषयों के प्रति मोह और बढ़ जाता है। सोचने की शक्ति का भटकाव हो जाता है। इससे बुद्धि का नाश निश्चित है। अब हमें चेतन मन द्वारा कॉन्शियसली अपने मन को इन विषयों के चिंतन से निकालना पड़ेगा, तभी जाकर मन और शक्तिशाली होगा।

इसमें भी आकर्षण का सिद्धान्त पूरी तरह से काम करता है। क्योंकि जितना हम आज दुनिया को देखेंगे, लोगों को देखेंगे, समाज को देखेंगे, संसार को देखेंगे, तो हमारे अंदर वो वाली बात आनी पक्की है, क्यों आएगी, क्योंकि ये सारी चीज़ें पहले से ही हमारे अंदर मौजूद हैं, और आप उसे देखकर और सोचकर पक्का कर रहे हैं। इन आकर्षणों से बचें, इनसे बचना ही आपके हित में है। होश में रहकर काम करें, ध्यान से करें, जागृति से करें, नहीं तो आने वाले समय में ये सारी चीज़ें दु:खदायी लगेंगी।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-8-2016

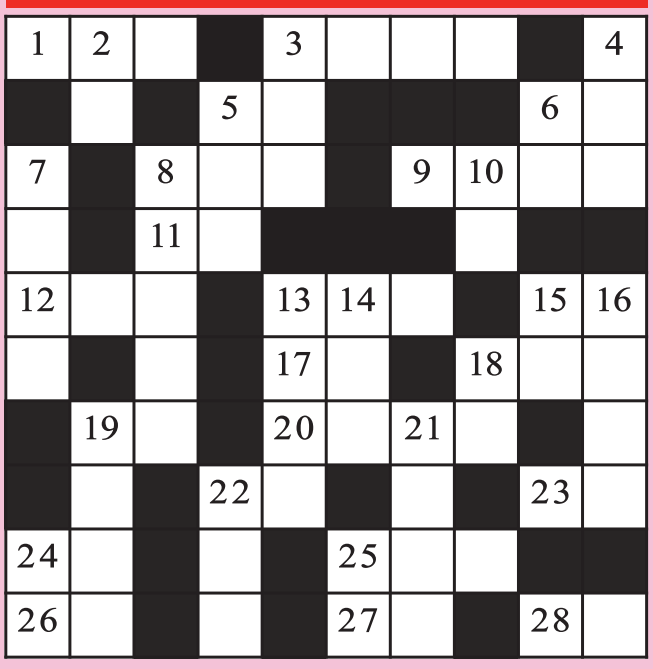

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. याद्दाश्त, याद, स्मरण (2)
3. नौकर, दास (3)
4. सलाहकार, सतयुग में....की दरकार नहीं होती (3)
5. बार-बार दुहराना, जपना (3)
6. विशिष्ट गान प्रकार, अनुराग, प्रेम (2)
7. आवश्यकता, ज़रूरत (4)
8. अवज्ञा करना, आदेश ना मानना (5)
10. तिनका, दूर्वा, एक घास (2)
13. सतयुग और त्रेता का समय, ...तुम बच्चों ने बहुत भक्ति की है (4)
14. निषिद्ध, विधि विरूद्ध, अनुचित, पापकर्म, व्यभिचार (3)
16. सलामत, सुरक्षित (4)
18. देव, देवता (2)
19. पथिक, यात्री, राही (4)
21. शक्तिशाली, ताकतवर (4)
22. वास्तविक, असली (3)
24. सेवक, नौकर, चाकर (2)
25. राय, विचार, सहमति (2)

बायें से दायें

1. यह हार और जीत, स्मृति और....का खेल है (3)
3. सेवा करने वाला, सेवादार (4)
5. आवाज़, शब्द, शोरगुल (2)
6. खुश, संतुष्ट, प्रसन्न (2)
8. रंगमंच, खेल, इस....में हरेक का पार्ट फिक्स है (3)
9. जादू दिखाने वाला, जादू करने वाला (4)
11. विनाश, नष्ट, खत्म (2)
12. लाचार, मजबूर (3)
13. किसी के आने जाने, बात करने से उत्पन्न मंद ध्वनि (3)
15. मूल्य, कीमत (2)
17. प्रवाह, लगातार बहाव, लगातार बहने वाली धार (2)
18. समझौता, संधि, मेल-मिलाप (3)
19. बेगम, राजा की पत्नी (2)
20. दुर्बल, निर्बल, ताकतहीन (4)
22. थोड़ा, बहुत कम (2)
23. वर्तमान, आद्य (2)
24. दागदार, लांक्षित (2)
25. उन्नति का.... पढ़ाई पर है, आधार (3)
26. सिर, तालाब, बाण (2)
27. भीगा, गीला, नम (2)
28. सूरत, शक्ल, प्रकृति (2)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

झज्जर-हरियाणा। नवनिर्मित सेवाकेन्द्र "वरदानी भवन" का उद्घाटन करने के पश्चात् कार्यक्रम में मंचासीन हैं आर.सी. विधान,आई.ए.एस.,डी.सी., म्युनिसिपल कमेटी चेयरमैन कविता जी, ब्रह्माकुमारीज़ के जनरल सेक्रेटरी ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. सन्तोष, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. सरला तथा अन्य।

अजमेर-राज.। नगर निगम की ओर से जवाहर रंगमंच पर कार्यक्रम के दौरान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर झाँकी सजाने के निमित्त ब्र.कु. अंकिता को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए महापौर की धर्मपत्नी और धर्मेन्द्र गहलोत। साथ हैं ब्र.कु.रमेश, ब्र.कु. ओमप्रकाश एवं ब्र.कु. कीर्ति।

भदोही-उ.प्र.। एन.सी.सी के युवाओं, अर्मी के जवानों, नेशनल इंटर कॉलेज एवं ज्ञान देवी के 200 युवाओं को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् भारतीय आर्मी के शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजली देते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी, नेशनल स्कूल के टीचर्स, आर्मी के जवान व अन्य।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर आरती करते हुए पूर्व सांसद महावीर लाल विश्वकर्मा, बी.सी.सी. एलरामगढ़ के डिप्युटी जी.एम. इन्द्र भूषण सिंह, रजिस्ट्रार सुभाष कुमार दत्ता, ब्र.कु. हर्षा तथा ब्र.कु. तृप्ति।

नारनौल-हरियाणा। 'श्रेष्ठ जीवन का आधार, मधुर हो आपसी व्यवहार' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. राजू,मुख्यालय संयोजक,ग्राम विकास प्रभाग,माउण्ट आबू, राजेश यादव, जिला प्रमुख,महेन्द्रगढ़, श्रीमती भारती सैनी,नगर पालिका चेयरमैन, सुरेश यादव,ब्लॉक समिति चेयरमैन, ब्र.कु. रतन बहन तथा अन्य।

जयपुर-बनीपार्क। 'इन्नर पावर्स एंड पॉज़ीटिव थिंकिंग' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में श्री अग्रसेन स्नात्कोत्तर शिक्षा महाविद्यालय सी.टी.ई. तथा केशव विद्यापीठ के वरिष्ठ शिक्षकों के साथ ब्र.कु.लक्ष्मी व ब्र.कु. दीप्ति।